CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में पशुपालन का महत्व

हरि प्रसाद यादव
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
Email-hariyadav1398@gmail.com, Mob.-9602492477

First draft received: 12.07.2023, Reviewed: 18.07.2023, Accepted: 26.07.2023, Final proof received: 30.07.2023

Abstract

पशुपालन भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण उप–क्षेत्र है। पशुधन क्षेत्र भारत में 60% से अधिक ग्रामीण आबादी को आजीविका सहायता प्रदान करने में एक बहुआयामी भूमिका निभाता है और भारत की पोषण सुरक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि देश की इस जीवंत परिसंपत्ति को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें आहार एवं चारे की कमी, बीमारी का प्रकोप, बदतर पशुधन विस्तार सेवाएँ, पशुधन उत्पादों के लिये असंगठित बाज़ार आदि शामिल हैं, जो पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादकता को समग्र रूप से देखने हेतु गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता रखते हैं। पशुपालन ऐतिहासिक रूप से भारत में कृषि का एक अभिन्न अंग रहा है और वर्तमान में भी प्रासंगिक है क्योंकि ग्रामीण समाज का एक बड़ा वर्ग सक्रिय रूप से कृषि कार्य में संलग्न एवं इस पर निर्भर है। पशुपालन से जुड़े विभिन्न पहलुओं; जैसे– मवेशियों की नस्ल, पालन–पोषण, स्वास्थ्य एवं आवास प्रबंधन इत्यादि में किए गये अनुसंधान एवं उसके प्रचार–प्रसार का परिणाम है। अन्य देशों की तुलना में हमारे पशुओं का दुग्ध उत्पादन अत्यन्त कम है और इस दिशा में सुधार की बहुत संभावनायें है। विश्व में हमारा स्थान बकरियों की संख्या में दूसरा, भेड़ों की संख्या में तीसरा एवं कुक्कुट संख्या में सातवाँ है। कम खर्चे में, कम स्थान एवं कम मेहनत से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए छोटे पशुओं का अहम योगदान है। अगर इनसे सम्बंधित उपलब्ध नवीनतम तकनीकियों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाय तो निःसंदेह ये छोटे पशु गरीबों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस तरह पशुपालन व्यवसाय में ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करने तथा उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने की अपार सम्भावनायें हैं।

Keywords: पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, नस्ल, अर्थव्यवस्था एवं असंगठित बाज़ार **आदि .**

परिचय

सिंधु घाटी की खुदाई से प्राप्त तथ्यों के आधार से स्पष्ट होता है कि हमारे देश की अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्व प्राचीन काल से चला आ रहा है। भारतीय मनीषियों ने पशुओं के संरक्षण तथा पशु–पूजा का नियम बनाया था, जो वर्तमान समय तक चला आ रहा है। विश्व की कुल पशु संख्या का 19 प्रतिशत भारत में है। पशु संख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है, जबकि पशु घनत्व की दृष्टि से द्वितीय स्थान पर है। पशुओं की बढती संख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत के पास व्यापक क्षमता है। पशुपालन कृषि विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत पालतू पशुओं के विभिन्न पक्षों जैसे भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य, प्रजनन आदि का अध्ययन किया जाता है। पशुपालन का पठन–पाठन विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में किया जा रहा है। पशुपालन क्षेत्र किसानों की आय दोगुनी करने में मदद करने के साथ–साथ ग्रामीण भारत के परिवेश को बदल रहा है। हालांकि कृषि क्षेत्र की वृद्धि लगभग 3–4% रही है, फिर भी यह भारत के 50% से अधिक लोगों के लिए आजीविका का प्राथमिक स्रोत बना हुआ है। वर्ष 2021–22 में केंद्र सरकार द्वारा समय पर हस्तक्षेप के रूप में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के तहत 20 लाख करोड़ रुपए का आर्थिक पैकेज और विकास को बढ़ावा देने वाली अन्य योजनाओं के साथ मिलकर कृषि को 3.9% की बेहतर वृद्धि हासिल करने में मदद कर रहा है। इसलिए पशुपालन क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह करोड़ों किसानों के लिए उत्कृष्ट संभावनाओं का वादा करता है और समग्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बड़ा बढ़ावा देता है।

आर्थिक सर्वेक्षण– 2021 के अनुसार सकल मूल्य वर्द्धन (निरंतर कीमतों पर) के संदर्भ में कुल कृषि और संबद्ध क्षेत्र में पशुधन का योगदान 24.32% (2014–15) से बढ़कर 28.63% (2018–19) हो गया है। भारत में विश्व का सबसे अधिक पशुधन है। भारत में 20वीं पशुधन जनगणना (20th Livestock Census) के अनुसार, देश में कुल पशुधन आबादी 535.78 मिलियन है। इस पशुधन जनगणना में वर्ष 2018 की जनगणना की तुलना में 4.6% की वृद्धि हुई है। 2021 में पशुपालन बाजार का अनुमान लगभग 1000 बिलियन रुपए रहा और विशेषज्ञों को उम्मीद है कि यह 2027 तक 1,574.7 बिलियन रुपए तक पहुंच जाएगा। इसका मतलब यह है कि 2022–2027 के दौरान विकास दर 7. 66% होने का अनुमान है, जो कृषि की विकास दर से लगभग दोगुना है। पशुधन क्षेत्र पिछले पांच वर्षों के दौरान 8.15% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है। स्पष्ट रूप से पशुपालन में कृषि की तुलना में किसानों की आय बहुत तेजी से बढ़ाने की क्षमता है। इसके अलावा यह क्षेत्र बढ़ती आबादी के बीच अंडे, मांस, मछली, डेयरी उत्पादों और ऐसी अन्य चीजों की बढ़ती खपत के साथ और गति पकड़ सकता है। पशुपालन उत्पादों के निर्यात में भी पिछले कुछ वर्षों में अच्छी वृद्धि दर्ज की गई है। जीविका के लिए पशुपालन क्षेत्र पर निर्भर लोगों की संख्या की बात करें, तो इनकी संख्या दो करोड़ से अधिक है। देश में लगभग 8.8% आबादी को रोजगार प्रदान करने के अलावा पशुधन छोटे कृषि परिवारों की आय में 16% और सभी ग्रामीण परिवारों के लिए 14% का योगदान देता है। निस्संदेह, लाखों ग्रामीण लोगों के लिए पशुपालन आय का एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है और अन्य ग्रामीण परिवारों के लिए आय

का एक द्वितीयक स्रोत भी है। यह तेजी से भारत के किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। (Nddb.Coop. 2021) पशु उत्पादों के निर्यात का भारतीय कृषि क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भारत में पशुधन का महत्त्व

कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है:

- पशुधन क्षेत्र 8 प्रतिशत आबादी को रोजगार देता है, और दो–तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है।
- ग्रामीण भारत में अधिकांश महिलाएं पशुधन क्षेत्र में लगी हुई हैं। इसलिए पशुधन क्षेत्र को मजबूत करने का मतलब ग्रामीण भारत को समृद्धि की ओर अग्रेसित करना है।
- यह विशेष रूप से प्राकृतिक और साथ ही मानवजनित कारकों के कारण कृषि हानि के दौरान किसानों के लिए सहायक आय का एक स्रोत भी है।
- आज दूध उत्पादन और मूल्य की दृष्टि से भारत की सबसे बड़ी कृषि वस्तु है। 2019–20 में अकेले दूध की कीमत करीब 8 लाख करोड़ रुपये थी।
- दूध, मांस और अंडे न्यूनतम प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं इसलिए यह पोषण सुरक्षा प्रदान करता है।

ग्रामीण विकास में पशुपालन का महत्व

- यह ग्रामीण आजीविका का प्रमुख आधार है। विशेष रूप से भूमिहीन और सीमांत किसान पशुपालन से अपनी पारिवारिक आय एवं संपत्ति में वृद्धि कर सकते हैं।
- पशुपालन और कृषि परस्पर जुड़ी हुई प्रक्रियाएं हैं। पशुओं के लिए भोजन कृषि से प्राप्त होता है, इसलिए पशु भी कृषि के लिए विभिन्न प्रकार के निविष्ट प्रदान करते हैं, जैसे भोजन, परिवहन आदि।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और छिपी बेरोजगारी की समस्या को पशुपालन द्वारा हल किया जा सकता है।
- प्रायः महिलाएं पशुपालन से जुड़ी होती हैं। इसलिए यह श्रम क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देकर महिला सशक्तिकरण में योगदान देता है।
- ग्रामीण गरीबों के लिए पशु उत्पाद 'प्रोटीन' और 'पोषक तत्वों' का उत्कृष्ट स्रोत हैं।
- पशुधन आर्थिक विकास में अनेक तरह से अपनी भूमिका निभाता है। देश के लगभग 70 करोड़ व्यक्ति कृषि पर निर्भर हैं। इनमें से लगभग 7 करोड़ कृषकों द्वारा पशुपालन किया जाता है। देश में कृषि उत्पादन में पशुपालन का योगदान 30 प्रतिशत है। ग्रामीणों को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में पशुपालन काफी सहायक है। एक अनुमान के अनुसार कृषि में पशुश्रम का कुल मूल्य 300 से 500 करोड़ रुपये है।
- पशुओं के गोबर से खाद प्राप्त होती है। उनके सींग, खुर एवं हड्डियों का चूर्ण बनाकर कई तरह से उपयोग किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के लिए पशुओं का विशेष उपयोग किया जाता है।
- एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 1.5 करोड़ बैलगाड़ियां हैं। अनेक उद्योगों की आधारशिला भी पशुओं पर निर्भर करती हैं, जैसे – चमड़ा उद्योग, ऊनी उद्योग, वस्त्र उद्योग, मांस उद्योग, डेरी उद्योग आदि मुख्य हैं। भारत में विशेष तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के लिए पशुओं का विशेष उपयोग होता है।
- पशुओं से हमें विदेशी मुद्रा अर्जन करने में भी विशेष सहायता मिलती है। हमारी राष्ट्रीय आय में पशुधन का विशेष योगदान है। कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 10 प्रतिशत हमें पशुधन से प्राप्त होता है।
- देश में प्रोटीन की आवश्यकता पूरा करने में दूध, अंडे और मांस का योगदान है। दूध की पैदावार के मामले में भारत दुनिया में शीर्ष स्थान पर है। गाय का दूध अमृत के समान तथा बकरी का दूध औषधि तुल्य माना जाता है।
- वर्ष 1950–51 में दूध का उत्पादन मात्र एक करोड़ 70 लाख टन था, जो वर्ष 2002–03 में बढकर 8 करोड़ 67 लाख टन हो गया है। पशुपालन तथा इससे संबंधित उत्पादों के निर्यात से होने वाली आय में काफी वृध्दि हो रही है। 1991 में पशुधन और उससे सम्बध्द उत्पादों से 59500 लाख रुपये का निर्यात हुआ, जबकि वर्ष 1996–97 में यह बढकर 192500 लाख रुपये हो गया था।

भारत के सामाजिक–आर्थिक जीवन में पशुधन की भूमिका

किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में किसान मिश्रित कृषि प्रणाली यानी फसल और पशुधन का संयोजन बनाए रखते हैं जहां एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है जिससे संसाधन दक्षता का एहसास होता है। पशु विभिन्न तरीकों से किसानों की सेवा करते हैं।

आय

लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। छोटे खेतिहर परिवारों की आय में पशुधन का योगदान 16% था, जबकि सभी ग्रामीण परिवारों का औसत 14% था। पशुधन दो–तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है। एनएसएसओ के 70वें दौर के अनुसार, पशुधन पालन 3.7 प्रतिशत कृषि परिवारों की आय का एक प्रमुख स्रोत है। पशुधन क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद का 11% और कुल कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 25. 6% योगदान देता है।

रोज़गार

भारत में बड़ी संख्या में लोग कम साक्षर और अकुशल होने के कारण अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। रोजगार और बेरोजगारी पर छैठे के 68वें दौर के सर्वेक्षण के अनुसार, 16.44 मिलियन श्रमिक जानवरों की खेती, मिश्रित खेती, मछली पकड़ने और जलीय कृषि की गतिविधियों में लगे हुए थे।

भोजन

दूध, मांस और अंडे जैसे पशुधन उत्पाद पशुपालकों के सदस्यों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 375 ग्राम/ दिन है; 2017–18 के दौरान अंडे 74/ वर्ष है।

सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक

2018–19 में 6.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ देश में दूध का उत्पादन 188 मिलियन टन था, जिसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़कर 394 ग्राम प्रति दिन हो गई।

सामाजिक सुरक्षा

पशुपालन भारतीय संस्कृति का अंग है। जानवरों का उपयोग विभिन्न सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता है। हाउस वार्मिंग समारोह के लिए गायों; त्योहारों के मौसम में बलि के लिए मेढ़े, हिरन और मुर्गे; विभिन्न धार्मिक कार्यों के दौरान बैल और गाय की पूजा की जाती है। जानवर समाज में अपनी स्थिति के संदर्भ में मालिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिन परिवारों के पास विशेष रूप से भूमिहीन हैं, उनके पास पशु नहीं हैं, उनकी तुलना में बेहतर है।

लिंग समानता

पशुधन उत्पादन में श्रम की तीन–चौथाई से अधिक मांग महिलाओं द्वारा पूरी की जाती है। पशुधन क्षेत्र में महिलाओं के रोजगार का हिस्सा राजस्थान, पंजाब और हरियाणा में लगभग 90% है।

गोबर

ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है जिसमें ईंधन (गोबर के उपले), उर्वरक (खेत की खाद) और पलस्तर सामग्री (गरीब आदमी का सीमेंट) शामिल हैं।

मत्स्य पालन क्षेत्र

यह क्षेत्र प्राथमिक स्तर पर लगभग 16 मिलियन मछुआरों और मछली किसानों को आजीविका प्रदान करता है और मूल्य श्रृंखला के साथ लगभग दोगुना है। इस क्षेत्र का कृषि, वानिकी और मछली पकड़ने से सकल घरेलू उत्पाद का 58 प्रतिशत हिस्सा है।

भारत में पशुपालन से सम्बन्धित योजनायें –

भारत मे पशुपालन से सम्बंधित कई विकास योजनायें समय–समय पर सरकार द्वारा प्रारम्भ की जाती रहती है, जिसके अच्छे परिणाम निकल रहे है। महत्वपूर्ण योजनाएँ निम्नलिखित है –

- पशुपालन अवसंरचना विकास कोष (AHIDF)
- राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM)
- पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण (LH&DC) योजना
- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP)
- पशुधन का रोग संरक्षण
- राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम
- मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (एफआईडीएफ)
- ई–पशु हाट पोर्टल
- राष्ट्रीय गोकुल मिशन
- राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम
- मूल ग्राम योजना
- गोशाला विकास योजना
- सघन पशु विकास योजना
- दूध बस्ती
- चारा तथा चारागाह विकास योजना

- गोसदन योजना
- पशुधन बिमा योजना

भारत में पशुधन से संबंधित वर्तमान चुनौतियाँ

पशु रोगों में वृद्धि – पशुओं में संचारी रोगों में वृद्धि देखी जा रही है। हाल ही में भारत के विभिन्न राज्यों में मवेशियों में गाँठदार त्वचा रोग (Lumpy Skin Disease, LSD) का प्रकोप देखा गया है। राजस्थान में 10 लाख से अधिक मवेशियों में गाँठदार त्वचा रोग पाया गया है। दक्षिण भारत में केरल में पशुओं में अफ्रीकी स्वाइन बुखार के मामले दर्ज किये गए। खराब पशु स्वास्थ्य और बीमारियों के कारण दूध और मांस की पैदावार कम होती है। पशु मुंहपका–खुरपका रोग (Foot and Mouth Disease, FMD), ब्रुसेलोसिस या ब्लैक क्वार्टर जैसी कई बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। केवल एफएमडी के कारण वार्षिक घाटा ₹20,000 करोड़ से अधिक है। सिर्फ एफएमडी को नियंत्रित किया जाए तो दूध उत्पादन में 5–6 फीसदी प्रति वर्ष और मांस का निर्यात 3–5 गुना बढ़ जाएगा।

आहार और चारे की कमी

तीव्र शहरीकरण और सिकुड़ते भूमि आकार के कारण पशुधन क्षेत्र आहार और चारे की गंभीर कमी का सामना कर रहा है। भारत में चारा उत्पादन के तहत कृषि योग्य भूमि का मात्र 5% ही उपयोग किया जाता है। स्थायी चरागाहों और चराई भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल का महज 3.30% शामिल है। ICAR-IGFRI की एक रिपोर्ट के अनुसार सूखे चारे की उपलब्धता में 23.40% और हरे चारे की उपलब्धता में 11.24% की कमी है।

अपर्याप्त वित्तीय ध्यान

कृषि और संबद्ध क्षेत्रों पर कुल सार्वजनिक व्यय का केवल 12% ही इसे प्राप्त होता है जो कृषिगत सकल घरेलू उत्पाद में इसके योगदान की तुलना में कम है।

अविकसित उत्पाद बाज़ार

भारतीय पशुधन उत्पाद बाज़ार प्रायः अविकसित है, यहाँ अनिश्चितता व्याप्त है और पारदर्शिता की कमी है तथा यहाँ प्रायः अनौपचारिक बाज़ार मध्यस्थों का प्रभुत्व देखा जाता है। बाज़ारों तक पहुँच की कमी किसानों को उन्नत तकनीक और गुणवत्तापूर्ण इनपुट अपनाने के प्रति निरुत्साहित करती है। डेयरी एकमात्र उत्पाद है जिसमें सार्वभौमिक रूप से परिवर्तन देखने को मिलते हैं, जबकि अन्य उत्पाद बहुत पीछे हैं।

पर्याप्त विस्तार सेवाओं का अभाव

पशुधन विस्तार सेवा में उपयुक्त पशु चिकित्सा सेवाएँ (टीकाकरण, रोग से बचाव एवं नियंत्रण), पशुधन जागरूकता और कृमिहरण (Deworming) शामिल हैं। जबकि फसल उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में विस्तार सेवाओं की भूमिका को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, पशुधन विस्तार पर कभी भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया और यह भारत के पशुधन क्षेत्र की कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में से एक रहा है।

पशुधन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

गर्म और आर्द्र परिवेश 'हीट स्ट्रेस' का कारण बनता है जो पशुधन में व्यवहारगत एवं चयापचय भिन्नता को प्रभावित करता है और कुछ मामलों में मृत्यु दर को भी बढ़ाता है। मानसून का बदलता पैटर्न उनके प्रजनन मौसम को बाधित करता है और बाढ़ जैसी आपदाओं के समय में पशुओं को भी मानव आबादी के ही समान आघात, भूख, प्यास, विस्थापन, बीमारी और तनाव जैसे विकट प्रभावों को झेलना पड़ता है।

पारदर्शिता की कमी

देश के लगभग आधे पशुधन अभी भी वर्गीकृत नहीं हैं। इसके अलावा भारतीय पशुधन उत्पाद बाज़ार ज़्यादातर अविकसित, अनिश्चित, पारदर्शिता की कमी और अनौपचारिक बाज़ार मध्यस्थों के प्रभुत्त्व वाले हैं।

उपाय

भारत में पशुपालन क्षेत्र में निम्न विकास दर और निम्न उत्पादकता को देखते हुए इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने की आवश्यकता है। भारत में पशुपालन के क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाएं हैं, यह किसानों की आय को दोगुना करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसके लिए सहायक सेवाओं और प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

- नई नस्लों का पंजीकरण
- पशु चिकित्सा एम्बुलेंस सेवा और अनिवार्य पशुधन टीकाकरण
- 'एक स्वास्थ्य' का दृष्टिकोण

सुझाव

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों की ओर अग्रसरित है, इसके बावूजद पशुपालन, जो कि प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि है, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पशुपालन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5.2 फीसदी की भागीदारी रखता है और 8 करोड़ से अधिक किसानों की आजीविका का साधन है। यद्यपि पशुधन क्षेत्रक के विकास से दूध, अंडे और मांस की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में सुधार हुआ है तथापि विकसित देशों की तुलना में प्रति पशु उत्पादकता बहुत कम है। भारत सरकार द्वारा जारी आर्थिक सर्वे (2021–2022) के अनुसार देश में दुग्ध उत्पादन 2014–15 की तुलना में लगभग 6.2 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़कर 2020–21 में 209.96 मिलियन टन हो गया है। भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है जो वैश्विक दुग्ध उत्पादन में 23 प्रतिशत का योगदान देता है। पशुधन क्षेत्रक में अच्छी वृद्धि के बावजूद संक्रामक पशु रोग पशुधन क्षेत्रक के कुशल विकास में बाधक बन रहें हैं। इसके अलावा, पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले जूनोटिक रोग भी इस क्षेत्र के विकास में प्रमुख बाधा है। सीमित जैव सुरक्षा उपायों के साथ पारंपरिक पशुपालन प्रणालियों और पशुधन के साथ निकट संपर्क के कारण, मनुष्यों में जूनोटिक रोग संचरण का जोखिम और भी बढ़ गया है। हालांकि पशुधन के मामले में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है परन्तु फिर भी पशुपालन व्यवसाय पिछड़ा हुआ है। भारत में दुधारू पशुओं में दुग्ध की मात्रा अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। भारत में पशुपालन व्यवसाय के पिछड़ा होने एवं उनके स्तर में गिरावट के मुख्य कारणों में शामिल हैं– अनुपयोगी पशुओं की अधिक संख्या, निर्धन किसान, अच्छी नस्ल के पशुओं की कमी, पौष्टिक चारे का अभाव, दोषपूर्ण प्रजनन क्रिया, पशुओं के रोग एवं बीमारियों का उचित इलाज का अभाव, पशुओं के क्रय–विक्रय की उचित व्यवस्था न होना और पशुपालन व्यवसाय के प्रति सरकार की उदासीनता का रुख आदि।

1. चारा सुरक्षा
2. आनुवंशिक निगरानी
3. टीकाकरण
4. मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयाँ
5. भ्रांतियों को दूर करना
6. एकीकृत पशुधन बाज़ार
7. स्वदेशी नस्ल के जीन बैंक
8. पशु एम्बुलेंस सेवा और अनिवार्य पशुधन टीकाकरण
9. 'वन हेल्थ' दृष्टिकोण की ओर

निष्कर्ष

यदि भारत में महामारी प्रेरित आर्थिक मंदी में पशुपालन क्षेत्र में समय पर निवेश किया जाता है तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अत्यधिक लाभ हो सकता है। पशुपालन क्षेत्र से जलवायु परिवर्तन और रोज़गार से संबंधित लाभ जुड़े हैं। यदि इस क्षेत्र में प्रसंस्करण इकाइयों को अधिक ऊर्जा–कुशल बनाया जाता है, तो ये कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद कर सकते हैं। ग्रामीण समाज में पशुधन की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता अतः पशुधन विकास से निर्धन ग्रामीण समाज को साधन सम्पन्न बनाया जा सकता है। कम खर्चे में, कम स्थान एवं कम मेहनत से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए छोटे पशुओं का अहम योगदान है। अगर इनसे सम्बंधित उपलब्ध नवीनतम तकनीकियों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाय तो निःसंदेह ये छोटे पशु गरीबों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस तरह पशुपालन व्यवसाय में ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करने तथा उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने की अपार सम्भावनायें हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. ग्रामीण समाज और पशुधन (2022, क्मबमउइमत 29), नई दिल्ली : द हिंदू.
2. पशु स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति और संबंधित मुद्दे (2022, October 4) जयपुर : हिंदुस्तान टाइम्स.
3. भारत में दूध उत्पादन (द.क.). Nddb.Coop. Retrieved 2022, December 8, from https%www.nddb.coop@hi@information@milkprodindia
4. Mohan, C. Madan (2022)- Dairy Management in India, New Delhi - Mittal Publications.
5. वेंकट सुब्रमण्यम, बी. सिंह, ए. के. राव, एस. वी. एन. (2021). "डेयरी डेवलपमेंट इन इण्डिया", नई दिल्ली : कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी।
6. बनर्जी, अनमेष : इनोवेशन एण्ड कम्पटीटिव एडवान्टेजज (2023). "इण्डियन इण्डस्ट्री", इण्डियन डेरीमैन, दिसम्बर 2022, नई दिल्ली : इण्डियन डेयरी एसोसिएशन।
7. पशु स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति और संबंधित मुद्दे (2022, ब्बजवइमत 4) जयपुर : हिंदुस्तान टाइम्स।
8. कुमार सत्येन्द्र (नवम्बर 2021). "दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ और महिलाएँ", नई दिल्ली : कुरुक्षेत्र।